खुद राह चुनती महिलाएं

कैटलिन मैक्वी

ग्रामीण महिलाएं सेहत के बारे में खुद के साथ ही लोगों को भी जागरूक बना रही हैं।

धूप की चौंध में बसन्ती साड़ी के पल्लू से सिर ढकती शमा परवीन आंखें सिकोड़ती हैं। सिर्फ 14 बरस की उम्र में ज़ाकिर हुसैन की पत्नी बनकर बचपन से सीधे वयस्कता में पहुंचने की अपनी कथा सुनाते उसका स्वर स्थिर है। शादी के सालभर के अंदर उनके चार बच्चों में से सबसे बड़ी मिदह उसके पेट में थी। बहुत जल्द ही उन्होंने बिहार के हरथू गांव के एक टोले में स्थित अपने घर-परिवार की ज़िम्मेदारी पूरी तरह उठा ली। उनके पति हुसैन रेलवे स्टेशन पर थैले बेचकर अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे। उस मामूली आमदनी में से भी शमा परवीन ने किसी तरह मिदह के दहेज़ के लिए 15,000 रुपये बचा लिए थे। बेटी 15 बरस की हुई तो उसकी मंगनी बिरादरी के एक नौजवान से तय कर दी गई। परवीन खुश थीं कि लड़का अच्छा है, बेटी सुखी रहेगी।

बिहार के हरथू गांव में अपने घर में मिदह और शमा परवीन।

सागर, विनोबा आश्रम एवं लोक शिक्षण केंद्र (बालस्क- पाथफाइंडर प्रचार का सहयोगी गैरसरकारी संगठन) के कर्मी।

बेटी की मंगनी कर देने के कुछ ही दिन बाद परवीन ने प्रमोटिंग चेंज इन रिप्रॉडक्टिव बिहेवियर इन बिहार (प्रचार) प्रोजेक्ट द्वारा प्रजनन स्वास्थ्य के क्षेत्र में परिवार कल्याण सलाहकार के प्रशिक्षण के बारे में सुना तो उत्सुकता से भर उठीं। खुद गर्भ और प्रसव के दौरान बहुत परेशानी झेल चुकी परवीन परिवार कल्याण के बारे में जानना चाहती थीं ताकि अपनी बेटियों और अपने समुदाय की युवा स्त्रियों की परेशानी से बचने में मदद कर सकें।

शुरू में उसके पति ज़ाकिर हुसैन ने सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों के चलते अपनी पत्नी द्वारा यौन सम्बन्धों और प्रजनन के बारे में बातें करने का विरोध किया। लेकिन परवीन को स्वयंसेवी प्रशिक्षु के रूप में चुने जाने और प्रचार संस्था के लोगों के समझाने पर ज़ाकिर को समझ में आ गया कि अपनी पत्नी परवीन के इस अभियान का हिस्सा बनने से परिवार और समुदाय को आवश्यक सूचनाएं आसानी से उपलब्ध हो पाएंगी।

पांच दिन के प्रशिक्षण के दौरान परवीन को प्रजनन स्वास्थ्य और परिवार नियोजन और उससे जुड़े उपलब्ध संसाधनों और सेवाओं के बारे में काफी जानकारी मिली। उन्हें पता चला कि लड़कियों का विवाह 18 बरस की आयु से पहले नहीं होना चाहिए और उन्हें 21 बरस की आयु से पहले गर्भधारण नहीं करना चाहिए क्योंकि इसका भारी दुष्प्रभाव उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य पर पड़ता है। अब परवीन को याद आया कि जल्दी हुए विवाह और प्रसव के उन पर कैसे दुष्प्रभाव पड़े।

नई जानकारी से खुद को एक नई ताकत से भरा महसूस कर रही परवीन ने ज़ाकिर हुसैन से जोर देकर कहा कि मिदह की सगाई तोड़ दी जाए। इससे लड़के वालों को दी गई भेंट डूबने का खतरा था लेकिन वह चाहती थीं कि अपनी नई जागरूकता और ज्ञान के बूते वह बेटी को कम उम्र में होने वाले विवाह से होने वाले नुकसान से बचा ले। शमा परवीन याद करती हैं, ''कम उम्र में बच्चे पैदा होने से मुझे जो परेशानियां हुईं, वे मेरी बच्ची को नहीं होनी चाहिएं। मेरे पति ने बेटी की सगाई तोड़ दी। मेरे परिवार ने मेरे फैसले को माना।'' जैसा कि उन्हें पता ही था, लड़के वालों ने सगाई में मिली भेंट लौटाने से इनकार कर दिया। लेकिन परवीन और ज़ाकिर को इसका कोई मलाल नहीं, उन्हें लगता है कि पढ़ाई जारी रखने और अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने को मिदह को मिले मौके की तुलना में यह नुकसान कुछ खास नहीं।

प्रचार पाथफाइंडर इंटरनेशनल द्वारा भारत में चलाए जा रहे कई कार्यक्रमों में से एक है जो वर्ष 2001 से भारत में प्रजननता और कम आयु में मां बनने से जुड़े सामाजिक मानदंडों में बदलाव लाने की कोशिश में जुटा है। पाथफाइंडर के डिप्टी कंट्री रिप्रेजेंटेटिव डब्ल्यू. सीता शंकर बताते हैं कि यह कार्यक्रम युवाओं और उनके अभिभावकों के साथ ही समुदाय के अगुआओं की मनोवृति और व्यवहार में बड़े बदलाव लाने का प्रयास कर रहा है और ''इसके लिए कार्यशालाओं, गोष्ठियों, नुक्कड़ नाटकों और कक्षाओं जैसे विभिन्न माध्यमों का सहारा लेता है।'' भारत में पाथफाइंडर का मुख्यालय दिल्ली में है और देश के कई भागों में इसकी परियोजनाएं और कार्यालय चल रहे हैं।

बिहार में प्रचार का जोर पहले बच्चे का जन्म देर से और बाकी बच्चों के जन्म में अंतर रखने को बढ़ावा देने पर है। प्रचार द्वारा उपलब्ध कराई जा रही जानकारी और संसाधन उन क्षेत्रों में युवा स्त्रियों को ताकत प्रदान कर रहे हैं जहां परम्परागत रूप से लड़कियों का विवाह काफी कम उम्र में हो जाता है और वे भारी सामाजिक और आर्थिक विषमता झेलती हैं। भारत के कई समुदायों में लड़कियों पर विवाह के बाद जल्दी से जल्दी गर्भधारण करने का दबाव रहता है। प्रचार ने 450 बदलाव एजेंटों को प्रशिक्षित किया है जो नवविवाहितों, एक सन्तान वाले युवा माता-पिता, सासों, किशोरों और देहात के चिकित्साकर्मियों को प्रशिक्षित और शिक्षित करते हैं। परवीन जैसे 3,000 सामुदायिक स्वंयसेवक इस काम में उनकी सहायता करते हुए समुदायों को प्रशिक्षित करते एक ऐसे सामाजिक वातावरण को प्रोत्साहित करते हैं जिसमें स्त्रियां अपनी पसन्द के विकल्प चुन सकती हैं।

एक अमेरिकी डॉक्टर क्लैरेंस गैम्बल ने वर्ष 1957 में द पाथफाइंडर फंड (www.pathfind.org/) की स्थापना की जो 1920 के दशक में अमेरिका में स्त्रियों और युगलों को गर्भनिरोध से परिचित करवाने के उनके प्रयास की ही परिणति थी। उन्होंने नवंबर 1929 में सिनसिनाटी मैटर्नल हेल्थ क्लीनिक की स्थापना करके स्त्रियों और पुरुषों को प्रजननता प्रबंधन की जानकारी देनी शुरू की। आज पाथफाइंडर वाटरटाउन, मैसाच्यूसेट्स से काम करने वाला वैश्विक गैरलाभसर्जक संगठन है जो प्रजनन स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और एचआईवी/एड्स की रोकथाम के क्षेत्रों में काम कर रहा है।

1985 से डैनियल ई. पैलैग्रॉम के नेतृत्व में चल रहे पाथफाइंडर का वार्षिक बजट आज 9 करोड़ डॉलर से अधिक है और यह 20 से अधिक विकासशील देशों में काम कर रहा है।

इसके तीन प्राथमिक लक्ष्य हैं -एचआईवी /एड्स के बढ़ने की रोकथाम, असुरक्षित गर्भपातों के कारण पैदा हुई जटिलताओं से पीड़ित स्त्रियों को परिचर्या सुविधाएं उपलब्ध करवाना, और अमेरिका तथा दूसरे देशों में स्वास्थ्य नीतियों को प्रभावित करना। संगठन स्थानीय शासनों और साथी गैर-सरकारी संगठनों की साझेदारी में प्रजनन स्वास्थ्य और परिवार नियोजन सम्बन्धी सूचना का प्रचार-प्रसार करता है।

सीता शंकर कहते हैं, ''पाथफाइंडर ने पाया कि बिहार में हमारे साझेदार कई गैर-सरकारी संगठनों को केवल प्रजनन स्वास्थ्य, परिवार नियोजन के मुद्दे पर ही नहीं बल्कि परियोजना प्रबन्धन, मॉनिटरिंग और प्रशासन के क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण की ज़रूरत है। हम कक्षाओं, तकनीकी समर्थन, क्षेत्र परिवीक्षण और यात्राओं के माध्यम से स्थानीय स्तर क्षमता निर्माण करते हैं।''

महाराष्ट्र में पाथफाइंडर का मुक्ता प्रोजेक्ट 65 शहरों, गांवों और कस्बों में यौनकर्मियों और उनके ग्राहकों को सुरक्षित यौन व्यवहार के बारे में शिक्षित कर रहा है ताकि यौन संक्रमणों के फैलने को कम किया जा सके। मुक्ता 12 स्थानीय गैर-सरकारी संगठनों से जुड़ी है और भारत के 6 राज्यों में एचआईवी/एड्स की रोकथाम से जुड़े बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के आवाहन इनिशिएटिव का एक हिस्सा है।

यौनकर्मी समुदाय से चुने गए समानस्तरीय शिक्षकों, ऑटो चालकों और लॉज कर्मचारियों (इन्हें साथी कहा जाता है) को सूचना प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। मुक्ता ने 104 स्वास्थ्य सेवा केंद्र स्थापित किए हैं जिन्होंने वर्ष 2004 से लगभग 20,500 महिला और पुरुष यौनकर्मियों को स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध करवाई है। परियोजना उनके सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के पक्ष में भी पैरवी करती है।

कन्सॉर्शियम ऑन नेशनल कन्सेन्सस फ़ॉर मेडिकल अबॉर्शन इन इंडिया (http://www.aiims.edu/aiims/events/Gynaewebsite/ma_finalsite/report1_1_2.htm) के अनुसार गर्भपात करवाने वाली 1,000 स्त्रियों में से 7.8 की मृत्यु हो जाती है जिनमें ज़्यादातर गर्भपात गैरकानूनी तरीके से होते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि गर्भ की दूसरी तिमाही में गर्भपात करवाने वाली स्त्रियों की मृत्यु होने का खतरा 7 गुणा तक बढ़ जाता है।

पाथफाइंडर बिहार के 5 जिलों में स्त्रियों को सुरक्षित गर्भपात की सुविधा उपलब्ध करवाता है और लोगों को असुरक्षित गर्भपात के खतरों से सावधान करने के साथ ही गर्भपात के नए, सुरक्षित उपाय उपलब्ध करवाता है। संगठन का मत है कि स्त्रियों को उनकी प्रजननता पर सुरक्षित नियंत्रण उपलब्ध करवाना गर्भपात पर स्त्रियों की निर्भरता कम करने की कुंजी है।

परवीन जैसे हजारों लोग प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़ी गरीबी के विरुद्ध लड़ाई लड़ रहे हैं और अपनी जानकारी और बदलाव लाने की अपनी इच्छा को अपने समुदाय तक पहुंचा रहे हैं। सीता शंकर कहते हैं, ''शमा की कहानी प्रेरणास्पद है और सिद्ध करती है कि स्त्रियां बदलाव ला सकती हैं। स्त्रियों को स्वयंसेवी गर्भनिरोध परामर्शदाता के रूप में प्रशिक्षित करना एक अनूठी पहल है जो उन्हें शिक्षित करने के साथ ही उन्हें अपने आसपास की स्त्रियों का जीवन सुधारने को भी प्रेरित करती है।''

परवीन जुझारू सामुदायिक स्वयंसेवक बन गईं हैं और वित्तीय परेशानियों के बावजूद अपनी बेटी मिदह को पढ़ा रही हैं। मिदह ने अपनी शिक्षा जारी रखी है जिससे कि वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के अवसरों का लाभ उठा सके। शमा परवीन अक्सर अपने समुदाय के परिवारों को गर्भनिरोधक, बच्चों के जन्म में अंतर और सीमित परिवार के लाभ बताती हैं। परवीन एक अरब से भी अधिक जनसंख्या वाले देश की एक औसत नागरिक ही है लेकिन अपने सक्रिय जुड़ाव से वह अपने समुदाय को राह दिखा रही हैं।

कैटलिन मैक्वी सिएटल, वाशिंगटन में रहती हैं।

कम उम्र में विवाह और गर्भधारण के परिणाम

- कम उम्र में विवाह और गर्भधारण से शिक्षा में व्यवधान पड़ता है, आर्थिक अवसर और कौशल विकास सीमित होते हैं।
- कम उम्र में विवाह और गर्भधारण युवा स्त्रियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल, गंभीर परिणाम डालता है।
- बड़ी उम्र के पतियों की युवा पत्नियों के यौन हिंसा और यौन रोगों से संक्रमित होने की आशंका अधिक होती है क्योंकि उनकी व्यक्तिगत स्वायत्तता और सत्ता नहीं होती। शिक्षा, सूचना और सेवाओं तक उनकी पहुंच भी सीमित होती है।
- कम उम्र में विवाह और गर्भधारण राष्ट्रीय विकास को बाधित करता है।

कमल तोमर

प्रचार परियोजना प्रशिक्षण मार्गदर्शिका

प्रचार एनजीओ मार्गदर्शिका

ऊपर बाएं और बीच में: प्रचार संस्था की सक्रियता वाले क्षेत्रों में युवा महिलाएं किशोरावस्था प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भागीदारी करती हुईं।
ऊपर दाएं: स्थानीय पुरुषों का एक समूह प्रजनन स्वास्थ्य पर एक नुक्कड नाटक प्रस्तुत करते हुए।